

डेली करेंट अफेयर्स

UPSC & PCS

के लिए महत्त्वपूर्ण समसामयिकी

09/10/2026

- भवानीसागर बाँध
- स्लेटी एग्रेट
- संरक्षण आश्वासन | बाघ मानक
- प्रशस्त पोर्टल
- गोमती नदी
- राष्ट्रीय एससी-एसटी हब योजना
- हिम तेंदुआ
- इंडिया मोबाइल कांग्रेस (IMC), 2026
- घाना
- स्प्रिंगटेल की नई प्रजातियाँ
- ग्रीन कीलबैक

दिल्ली केंद्र : 636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

प्रयागराज केंद्र : महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

भवानीसागर बाँध


The Hindu

Kalingarayan ayacut farmers seek release of water from Bhavanisagar Dam

Farmers protest at Erode Collectorate demanding timely release of Bhavanisagar Dam water into Kalingarayan Canal for crops, citing pending...

चर्चा में क्यों

तमिलनाडु के किसानों ने हाल ही में इरोड कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया और भवानीसागर बाँध से कलिंगरायन नहर में पानी छोड़ने की माँग की।

भौगोलिक अवस्थिति

- भवानीसागर बाँध, जिसे लोअर भवानी बाँध भी कहा जाता है, तमिलनाडु के इरोड ज़िले में भवानी नदी पर स्थित है।
- भवानी नदी कावेरी की एक प्रमुख सहायक नदी है।
- यह बाँध नीलगिरि में पश्चिमी घाट के पूर्वी हिस्से से जल निकासी करने वाली नदी प्रणाली का हिस्सा है।

बुनियादी ढाँचा और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- 1948 से 1955 के बीच निर्मित यह बाँध दुनिया के सबसे बड़े मिट्टी के बाँधों में से एक है।
- यह तमिलनाडु का दूसरा सबसे बड़ा बाँध है।
- यह जलाशय लोअर भवानी परियोजना नहर को पानी उपलब्ध कराता है।

जल एवं ऊर्जा प्रबंधन

- यह बाँध सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, बिजली उत्पादन व बाढ़ नियंत्रण में मदद करता है।
- यह जल के अनुप्रवाह और तलछट के संचलन को नियंत्रित करने में भी मदद करता है।

स्लेटी एग्रेट

Down To Earth

Slaty Egret's behaviour shift signals how ecosystems are changing

Discover how the Slaty Egret's shifting behavior in Botswana's Okavango Delta reveals critical changes in ecosystems and serves as a vital...



चर्चा में क्यों

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) ने प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्रों में हो रहे बदलावों के एक उदाहरण के तौर पर 'स्लेटी एग्रेट' (Slaty Egret) में आए व्यवहारगत परिवर्तनों को रेखांकित किया है।

प्रजाति की पहचान

- स्लेटी एग्रेट (*Egretta vinaceigula*) एक छोटा जलपक्षी है जिसकी टाँगें और गर्दन लंबी हैं तथा पंखों का रंग स्लेटी-धूसर होता है जिसमें हल्की बैंगनी आभा दिखाई देती है।
- यह मछली पकड़ने की अपनी विशेष तकनीक के लिए जाना जाता है जिसमें यह पानी में अपने पैरों से हलचल करके मछलियों को बाहर निकालती है।

पारिस्थितिकी विशेषताएँ

- इसके आहार में मुख्यत: मछलियाँ, उभयचर व जलीय अकशेरुकी जीव शामिल हैं।
- आर्द्रभूमियों पर निर्भरता के कारण यह आवास क्षति, कृषि विस्तार व जल प्रबंधन में बदलावों के प्रति संवेदनशील है।
- इस प्रजाति को IUCN की लाल सूची में संवेदनशील (VU) श्रेणी में रखा गया है।

आवास एवं वितरण

- यह मुख्यत: बोत्सवाना के ओकावांगो डेल्टा में पाया जाता है और दक्षिण-मध्य अफ्रीका में भी इसकी उपस्थिति है।
- इसकी प्रमुख संख्या बोत्सवाना एवं ज़ाम्बिया में पाई जाती हैं।
- यह प्राय: ऐसे मौसमी आर्द्रभूमियों और बाढ़ के मैदानों में रहना पसंद करता है जहाँ शिकारियों से बचने के लिए सघन वनस्पति वाले द्वीपों या दलदलों में घोंसला बनाया जा सके।

संरक्षण आश्वासन | बाघ मानक (CA|TS)

चर्चा में क्यों

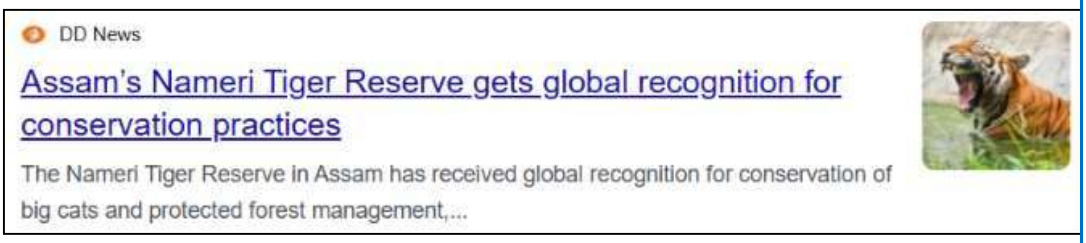

असम स्थित नामेरी टाइगर रिज़र्व को हाल ही में संरक्षण आश्वासन | बाघ मानक (CA|TS) के तहत अनुमोदित दर्जा मिला।

संस्थागत ढाँचा

- CA|TS बाघ अभयारण्यों के प्रबंधन एवं संरक्षण की प्रभावशीलता का आकलन करने वाला एक वैश्विक ढाँचा है।
- इसे 2013 में जापान में आयोजित प्रथम एशियाई उद्यान कांग्रेस में शुरू किया गया था।
- यह वन्यजीव संरक्षण, आवास प्रबंधन, समुदाय की भागीदारी और बाघों की निगरानी के लिए मानक निर्धारित करता है।

मूल्यांकन तंत्र

- इस ढाँचे में 7 स्तंभ और 17 एलिमेंट्स शामिल हैं जो बाघ संरक्षण क्षेत्रों के प्रबंधन के मानकों व मानदंडों को समेटते हैं।
- सात स्तंभ हैं: महत्त्व एवं स्थिति, प्रबंधन, समुदाय, पर्यटन (वैकल्पिक), संरक्षण, आवास प्रबंधन और बाघों की आबादी।
- पहले पाँच स्तंभ सामान्य संरक्षण प्रबंधन से संबंधित हैं जबकि अंतिम दो विशेष रूप से बाघ संरक्षण मानकों पर केंद्रित हैं।

भारतीय कार्यान्वयन और कवरेज

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) भारत में CA|TS के आकलन के लिए कार्यान्वयन साझेदारों के रूप में ग्लोबल टाइगर फोरम (GTF) और WWF-India के साथ काम करता है।

- इस स्रोत में 15 मान्यता प्राप्त बाघ अभयारण्यों की सूची दी गई है जिनमें असम के काजीरंगा, मानस, ओरांग व नामेरी; उत्तर प्रदेश का दुधवा तथा पश्चिम बंगाल का सुंदरबन शामिल हैं।
- सूची में शामिल अन्य अभयारण्यों में वाल्मीकि, कान्हा, पन्ना, सतपुड़ा, पेंच, अनामलाई, मुदुमलाई, परंबिकुलम एवं बांदीपुर शामिल हैं।

प्रशस्त पोर्टल

PIB

Department of School Education & Literacy, Ministry of Education, Organises Nationwide Screening of Inclusive Education Sensitization Module through PRASHAST

Press Information Bureau (PIB) is the nodal agency of the Government of India to disseminate information to the print and electronic media...



चर्चा में क्यों

स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (DoSEL) ने प्रशस्त (PRASHAST) पोर्टल के माध्यम से समावेशी शिक्षा पर 30 मिनट के संवेदनशीलता एवं अभिमुखीकरण मॉड्यूल की राष्ट्रव्यापी स्क्रीनिंग आयोजित की।



संस्थागत एवं कानूनी ढाँचा

- प्रशस्त (PRASHAST) का अर्थ प्री-असेसमेंट होलिस्टिक स्क्रीनिंग टूल (Pre-Assessment Holistic Screening Tool) है और इसे विद्यालयों में संभावित दिव्यांगता वाले बच्चों की पहचान करने के लिए तैयार किया गया है।
- यह दिव्यांग व्यक्ति अधिकार अधिनियम (RPwD), 2016 के अंतर्गत शामिल 21 दिव्यांगता स्थितियों की पहचान में सहायता करता है।

- यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 और समावेशी शिक्षा के उद्देश्य के अनुरूप है।

प्रारंभिक जाँच और रेफ़रल प्रक्रिया

- भाग I में नियमित शिक्षक प्रारंभिक जाँच करते हैं जबकि भाग II में विशेष शिक्षकों या परामर्शदाताओं के माध्यम से अवलोकनों की पुष्टि की जाती है।
- शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे 1–2 महीने तक कक्षाओं, खेल के मैदानों, पाठ्येतर गतिविधियों और सामाजिक मेलजोल के दौरान विद्यार्थियों का अवलोकन करें।
- जिन बच्चों को आगे के आकलन की आवश्यकता हो, उन्हें विस्तृत मूल्यांकन और दिव्यांगता प्रमाणन के लिए सक्षम प्राधिकारियों के पास भेजा जा सकता है।

शासन और शैक्षिक परिणाम

- यह पोर्टल नियमित शिक्षकों, विशेष शिक्षकों, परामर्शदाताओं और स्कूल प्रमुखों के लिए तैयार किया गया है।
- यह प्रारंभिक जाँच और रेफ़रल की व्यवस्था है, औपचारिक दिव्यांगता आकलन और प्रमाणन का विकल्प नहीं।
- इस पहल का उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समान पहुँच, शीघ्र पहचान और शैक्षिक सहायता को सुदृढ़ करना है।

गोमती नदी

The Times of India

Gomti recedes after 2 weeks, but long haul ahead for flood-hit families

Gomti river recedes in Lucknow after 2 weeks of flooding, but water remains trapped in colonies; 40000 affected as relief, boats,...

चर्चा में क्यों

गोमती नदी का जलस्तर हाल ही में बढ़ने से उत्तर प्रदेश के लखनऊ के कुछ हिस्सों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो गई।

भौगोलिक प्रवाह

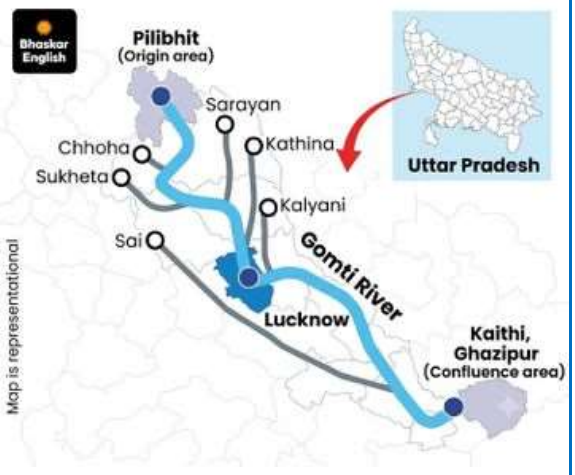

- गोमती, जिसे गुमती (Gumati) के नाम से भी जाना जाता है, गंगा की सहायक नदी है और पूरी तरह उत्तर प्रदेश में बहती है।
- इसका उद्गम पीलीभीत जिले के माधोटांडा के पास पीलीभीत टाइगर रिज़र्व के भीतर गोमथ ताल (फुल्हर झील) से होता है।
- गाज़ीपुर जिले में सैदपुर/कैथी के पास गंगा में मिलने से पहले यह नदी लगभग 940 किमी बहती है।

जल निकासी और भू-आकृति विज्ञान

- इसकी प्रमुख सहायक नदियों में सई, चौका, कठिना एवं सरयू नदियाँ शामिल हैं।
- इसके मार्ग में पड़ने वाले प्रमुख शहरों में लखीमपुर खीरी, लखनऊ, सुल्तानपुर एवं जौनपुर शामिल हैं।
- गोमती बेसिन में मोटे चतुर्थक जलोढ़ निक्षेप पाए जाते हैं जिनमें रेत, गाद, चिकनी मिट्टी, बजरी व कंकर की पिंड शामिल हैं।
- नवीन जलोढ़ निक्षेप मुख्यतः वर्तमान बाढ़-मैदानों में पाए जाते हैं जबकि पुराने जलोढ़ निक्षेप ऊँचे क्षेत्रों में, जिनमें दोआब क्षेत्र भी शामिल हैं, पाए जाते हैं।

जलवैज्ञानिक और पर्यावरणीय चिंताएँ

- गोमती एक सदानीरा नदी है। वर्ष के अधिकांश समय इसका प्रवाह अपेक्षाकृत धीमा रहता है जबकि मानसून के दौरान इसका अपवाह काफी बढ़ जाता है।
- मानसून की भारी वर्षा से जलस्तर बढ़ सकता है और शहरी बाढ़ का जोखिम बढ़ सकता है।
- नदी पर प्रदूषण का भारी दबाव है, इसलिए जल गुणवत्ता प्रबंधन और अपशिष्ट जल का उपचार शासन की महत्वपूर्ण प्राथमिकताएँ हैं।

राष्ट्रीय एससी-एसटी हब योजना

PIB

National SC-ST Hub: Powering Inclusive Entrepreneurship

The National SC-ST Hub (NSSH) is advancing inclusive entrepreneurship by enabling SC/ST enterprises to build capabilities and access wider...



चर्चा में क्यों

31 जुलाई 2026 तक राष्ट्रीय एससी-एसटी हब योजना ने शुरुआत से अब तक 1,90,414 लाभार्थियों को सहायता दी है और 54,499 उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया है।

संस्थागत ढाँचा और उद्देश्य



- राष्ट्रीय एससी-एसटी हब (NSSH) योजना अक्टूबर 2016 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) की एक प्रमुख पहल के रूप में शुरू की गई थी।
- इसे राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड (NSIC) द्वारा अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) समुदायों के बीच उद्यमिता को मजबूत करने के लिए लागू किया जाता है।
- इसका उद्देश्य एससी/एसटी-स्वामित्व वाले उद्यमों की क्षमता बढ़ाना और सार्वजनिक खरीद में उनकी भागीदारी बढ़ाना है।

वित्तीय और उद्यम सहायता

- यह योजना संयंत्र एवं मशीनरी, प्रशिक्षण, बाज़ार से जुड़ाव, प्रदर्शनियों, ऋण सुविधा, उद्यम पंजीकरण और GeM पर पंजीकरण के लिए सहायता प्रदान करती है।
- इसकी विशेष क्रेडिट-लिंक्ड पूंजी सब्सिडी योजना (SCLCSS) पात्र नए और मौजूदा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति-स्वामित्व वाले सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को संस्थागत

ऋण से वित्तपोषित पात्र संयंत्र, मशीनरी व उपकरणों के लिए 25% पूंजी सब्सिडी देती है जिसकी अधिकतम सीमा ₹25 लाख है।

- यह योजना अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति-स्वामित्व वाले सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के लिए 4% सार्वजनिक खरीद लक्ष्य में भागीदारी को बढ़ावा देती है। इसके साथ ही, यह विक्रेता-विकास और मार्गदर्शन सहायता भी प्रदान करती है।

आर्थिक एवं शासन संबंधी महत्व

- यह योजना अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को केंद्र व राज्य सरकारों के विभागों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (CPSEs) और अन्य सरकारी एजेंसियों से जुड़ने में मदद करती है।
- यह कौशल-विकास कार्यक्रमों, उद्योग संघों व विक्रेता-विकास पहलों के माध्यम से क्षमता निर्माण में सहायता करती है।

हिम तेंदुआ

Administration of Union Territory of Ladakh

L-G VK Saxena flags off India's first high-altitude Snow Leopard Wildlife Safari in Ladakh.

L-G VK Saxena flags off India's first high-altitude Snow Leopard Wildlife Safari in Ladakh. Initiative aims at promoting responsible tourism...



चर्चा में क्यों

लद्दाख के शीत-मरुस्थलीय क्षेत्र में भारत की पहली उच्च-ऊँचाई वाली हिम तेंदुआ वन्यजीव सफारी शुरू की गई।

जैविक विशेषताएँ

- हिम तेंदुआ (*Panthera uncia*) एक बड़ी जंगली बिल्ली है। अपनी दुर्लभ उपस्थिति और छद्मावरण के कारण इसे 'पहाड़ों का भूत' कहा जाता है।

- यह आमतौर पर 500–5,800 मीटर की ऊँचाई पर चट्टानी, झाड़ी-प्रधान एवं घासयुक्त पर्वतीय क्षेत्रों में रहता है।
- इसका सघन ऊष्मारोधी फर, चौड़े पंजे, छोटे गोल कान और बड़ी नासिका गुहाएँ इसे ठंडे, ऊँचाई वाले वातावरण में जीवित रहने में मदद करती हैं।

भौगोलिक वितरण

- यह प्रजाति मध्य एवं दक्षिण एशिया के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है जिनमें हिमालय, हिंदू कुश, तिब्बती पठार व अल्ताई पर्वत शामिल हैं।
- भारत में यह हिमालयी एवं पार-हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाती है।
- भारत में हिम तेंदुओं की अनुमानित संख्या 500–700 है।
- हिम तेंदुआ हिमाचल प्रदेश का राजकीय पशु है।

संरक्षण स्थिति और सुरक्षा

- आईयूसीएन की लाल सूची में हिम तेंदुए को सुभेद्य (VU) श्रेणी में रखा गया है।
- इसके ऊँचाई वाले आवासों पर आवास क्षरण, मानवीय व्यवधान और शिकार की उपलब्धता में बदलाव जैसी चुनौतियों का खतरा है।
- लद्दाख में वन्यजीव पर्यटन की पहलें संरक्षण के प्रति जागरूकता और स्थानीय आजीविका को बढ़ावा दे सकती हैं, बशर्ते उनका प्रबंधन इस तरह किया जाए कि इस प्रजाति को कम से कम व्यवधान हो।

इंडिया मोबाइल कांग्रेस (IMC), 2026

News On AIR

PM Modi inaugurates IMC 2026; says 5G connectivity reaches every district

Prime Minister Narendra Modi inaugurated the 10th edition of the India Mobile Congress (IMC) at Yashobhoomi in New Delhi.



चर्चा में क्यों

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 8 अक्टूबर, 2026 को नई दिल्ली के यशोभूमि में इंडिया मोबाइल कांग्रेस (IMC) के 10वें संस्करण का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने भारत की दूरसंचार प्रगति, डिजिटल शासन, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा साइबर धोखाधड़ी और डीपफेक से निपटने के लिए वैश्विक ढाँचे की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

संस्थागत ढाँचा और प्रमुख विशेषताएँ

- इंडिया मोबाइल कांग्रेस (IMC) का आयोजन दूरसंचार विभाग (DoT) और सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (COAI) द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है।
- इसका 10वाँ संस्करण 7 से 10 अक्टूबर 2026 तक नई दिल्ली के यशोभूमि में आयोजित किया गया।
- आईएमसी दूरसंचार, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और तकनीकी नवाचारों के विकास को प्रदर्शित करने वाले एक मंच के रूप में उभरा है।

डिजिटल शासन और नागरिकों को लाभ

- डिजिटल इंडिया अभियान ने डिजिटल विभाजन को कम करने और प्रौद्योगिकी तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने के प्रयासों के केंद्र में मोबाइल फोन को रखा है।
- मोबाइल कनेक्टिविटी ने नागरिकों की यात्रा, प्रतीक्षा समय और लागत को कम किया है जिससे सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच एवं सुविधा में सुधार हुआ है।
- प्रधानमंत्री ने इन लाभों को प्रौद्योगिकी का 'नागरिक लाभांश' बताया और सुशासन में डिजिटल कनेक्टिविटी की भूमिका पर प्रकाश डाला।

दूरसंचार विस्तार और डिजिटल अर्थव्यवस्था

- भारत ने 2022 में इंडिया मोबाइल कांग्रेस के मंच से 5G सेवाएँ शुरू कीं।
- घोषणा के अनुसार, भारत का 5G नेटवर्क बढ़कर 5.5 लाख से अधिक बेस स्टेशनों तक पहुँच गया है और देश के हर जिले को कवर करता है।
- भारत के गेमिंग इकोसिस्टम में 50 करोड़ से अधिक लोग भाग लेते हैं। मोबाइल कनेक्टिविटी ई-स्पोर्ट्स, डिजिटल सामग्री निर्माण और ऑनलाइन उद्यमिता को बढ़ावा देती है, जिनमें टियर-2 और टियर-3 शहर भी शामिल हैं।

तकनीकी आत्मनिर्भरता और उभरती चुनौतियाँ

- भारत का लक्ष्य प्रौद्योगिकी का उपभोक्ता होने से प्रौद्योगिकी का निर्माता बनने की ओर बढ़ना है जिसमें उत्पादों, डिज़ाइनों, प्रौद्योगिकी और बौद्धिक संपदा (IP) पर घरेलू स्वामित्व बढ़ाना शामिल है।
- दूरसंचार अधिनियम, 2023, नियामक सुधारों और पीएम गतिशक्ति मंच को दूरसंचार तथा बुनियादी ढाँचे के विकास में महत्वपूर्ण सहायक कारकों के रूप में रेखांकित किया गया।

चर्चा में रहे आज के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे

चर्चित स्थल	घाना

चर्चा में क्यों

घाना मंत्रिमंडल ने हाल ही में ब्रिक्स समूह की सदस्यता लेने के लिए आवेदन करने के निर्णय को मंज़ूरी दी।



भौगोलिक अवस्थिति

- घाना पश्चिम अफ्रीका में गिनी की खाड़ी और अटलांटिक महासागर के तट पर स्थित है।
- इसकी थल सीमाएँ पश्चिम में कोट दिव्वार, उत्तर में बुर्किना फासो और पूर्व में टोगो से

	लगती हैं। • इसकी राजधानी अकरा है और प्रधान मध्याह्न रेखा (0° देशांतर) देश से होकर गुजरती है। **भौतिक भूगोल** • घाना की जलवायु आम तौर पर उष्णकटिबंधीय, गर्म व आर्द्र है। • इसके प्रमुख ऊँचे भूभागों में क्वाहू पठार व गाम्बागा स्कार्प शामिल हैं। • माउंट अफादजाटो, माउंट डीजे बोबो और माउंट तोरोगबानी टोगो की सीमा के पास वोल्टा नदी के पूर्व में स्थित हैं। • वोल्टा नदी बेसिन इसकी जल निकासी प्रणाली का प्रमुख हिस्सा है और इसमें ब्लैक वोल्टा, व्हाइट वोल्टा एवं ओटी नदियाँ शामिल हैं। **आर्थिक और सामरिक रूपरेखा** • अकोसोम्बो बाँध से बनी वोल्टा झील दुनिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झीलों में से एक है। • सोना, कोको व पेट्रोलियम घाना की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक हैं। • ब्रिक्स (BRICS) की प्रस्तावित सदस्यता अंतरराष्ट्रीय आर्थिक और कूटनीतिक सहभागिता बढ़ाने में उसकी रुचि को दर्शाती है।
पर्यावरण	**स्प्रिंगटेल की नई प्रजातियाँ** The New Indian Express Two new species of springtails discovered by scientists in Nilgiris The researchers combined microscopic examination with DNA barcoding to confirm the discoveries. The findings were published in the taxonomic...  **चर्चा में क्यों** वैज्ञानिकों ने पश्चिमी घाट की नीलगिरि पहाड़ियों में स्प्रिंगटेल की दो नई प्रजातियाँ 'फोल्सोमिया सिएगा' व 'फोल्सोमिया यूनिओकुलाटा' (Folsomia ciega & Folsomia unioculata) की खोज की है। इससे फोल्सोमिया वंश की ज्ञात भारतीय प्रजातियों की संख्या बढ़कर 13 हो गई।

वर्गिकी पहचान



- दोनों प्रजातियाँ फोल्सोमिया वंश की हैं और मिट्टी में रहने वाले छोटे आर्थ्रोपोड हैं जिन्हें प्राय: स्प्रिंगटेल कहा जाता है।
- फोल्सोमिया सिएगा का नाम स्पेनिश शब्द 'ब्लाइंड' पर रखा गया है और इसकी पूरी तरह से आँखें नहीं होती हैं।
- फोल्सोमिया यूनिओकुलाटा का लैटिन में अर्थ 'एक आँख वाला' होता है और इसके सिर के प्रत्येक ओर एक-एक आँख होती है।

आकारिकी विशेषताएँ

- फोल्सोमिया सिएगा का रंग हल्का होता है। इसका शरीर लम्बाकार और लगभग 1 मिमी. लंबा होता है जिस पर बालों की विशिष्ट व्यवस्था होती है और पूँछ के सिरे पर म्यूक्रो (mucro) नामक दो नोकों वाली संरचना होती है।
- फोल्सोमिया यूनिओकुलाटा का आकार 1.3 मिमी. तक बढ़ता है और इसकी विशिष्ट नेत्र-व्यवस्था इसे संबंधित प्रजातियों से अलग करती है।
- स्प्रिंगटेल्स कोलेम्बोला गण के सदस्य हैं। इनके पंख नहीं होते और आमतौर पर इनके छह पैर, छोटे स्पर्शक तथा कोमल शरीर होते हैं।

पारिस्थितिक महत्त्व

- दिए गए स्रोत के अनुसार, स्प्रिंगटेल्स दुनिया के सबसे छोटे आर्थ्रोपोडों में से हैं। इनका आकार लगभग 0.2 मिमी. से 10 मिमी. तक होता है।
- इनके शरीर की सतह पर जल-रोधी, स्वयं-सफाई करने वाले, कंघी जैसे षट्कोणीय या समचतुर्भुज कण हो सकते हैं।
- इनकी खोज से पश्चिमी घाट की मृदा-जैव विविधता के बारे में जानकारी बढ़ती है। यह क्षेत्र वैश्विक स्तर पर जैव विविधता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

ग्रीन कीलबैक

Deccan Herald

Rare olive-green snake spotted in Karnataka's B R Hills

A rare olive green coloured Green Keelback snake was rescued near Gangawadi village in Biligiri Rangana Betta of Chamarajanagar district and...



चर्चा में क्यों

हाल ही में कर्नाटक के चामराजनगर ज़िले के येलंदूर तालुक में बिलिगिरि रंगना बेट्टा (बीआर हिल्स) के बाहरी इलाके में स्थित गंगवाड़ी गाँव के पास ग्रीन कीलबैक साँप मिला।

जैविक विशेषताएँ

- ग्रीन कीलबैक (*Macropisthodon plumbicolor*) दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया की मूल प्रजाति, विषहीन व अर्ध-जलीय साँप है।
- इसकी सामान्य लंबाई 60 सेमी से 1 मीटर तक होती है, हालांकि कुछ जीव 1.2 मीटर तक लंबे हो सकते हैं।
- इसका हरा शरीर, हल्के रंग का निचला भाग और कीलदार शल्क इसे अन्य साँपों से अलग पहचानने में मदद करते हैं।

भौगोलिक वितरण

- यह भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया व इंडोनेशिया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।
- यह तालाबों, नदियों, धाराओं, धान के खेतों, दलदलों व वनस्पतियों से युक्त अन्य आर्द्रभूमियों में रहता है।
- इसकी अर्ध-जलीय प्रकृति इसे पानी और जमीन, दोनों जगह शिकार करने में सक्षम बनाती है।

पारिस्थितिक और संरक्षण संबंधी महत्त्व

- इस प्रजाति को IUCN की रेड लिस्ट में संकटमुक्त (LC) श्रेणी में रखा गया है।
- आर्द्रभूमि से जुड़ा इसका आवास इसे मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र और

	आर्द्रभूमि की जैव विविधता के अध्ययन के लिए प्रासंगिक बनाता है।